श्रीश्रीगुरु गौरांगौ जयतः

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी महाराज

श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ,
सैक्टर 20 बी,चण्डीगढ़।
09-05-1971

स्नेह भजनेषु,

याद रखना कि साधक का जीवन सदा सुसंयत होना उचित है। बहुत लोगों के साथ इकट्ठे रहने के लिए सहन-शील होना अत्यन्त आवश्यक है। इसके अतिरिक्त उनमें से जो जिम्मेदार एवं ज्येष्ठ हों उन्हें वैसा कोई कार्य नहीं

करना चाहिए जो दूसरों के अनुकरण करने में अहितकार। बहुत व्यकित एकत्रित रहने पर उनके चरित्र, भजन, दोष-गुण आदि में फर्क अवश्य रहेगा। जन्म, ऐश्वर्य, पाण्डित्य एवं रूप यौवनादि की तात्कालिक या लौकिक मर्यादा नहीं देने पर बहुत स्थान में अशान्ति उत्पन्न होती है। अशान्त अथवा चंचल-चित्त से कभी भी भगवद्-स्मरण या मन्त्र-जप

ठीक प्रकार सुसम्पन्न नहीं होता है। इसलिए साधक को अपना चित्त स्थिर रखना चाहिए। चंचल-चित्त किसी विशेष विषय में आविष्ट होने पर, उससे श्रीभगवान की भक्ति नहीं होती।

श्रीमन् महाप्रभुजी के शिक्षाष्टक के तीसरे श्लोक के अर्थ को ठीक प्रकार समझ कर उसके अनुसार चलना चाहिए। संसार में सब जगह ही त्रिताप हैं।

जगत् के सब प्राणीयों या लोगों को अपने मत के अनुसार चलाना असम्भव है।

इसलिए शान्त- व्यक्ति, यह समझ कर कि उनके आराध्य देव का स्नेहमय हस्त सर्वत्र है, अपने अनुकूल अवस्था न होने पर भी अपने को विभिन्न अवस्थाओं में नियन्त्रित कर लेते हैं, "तत्कृपावलोकन" को साधन-भक्ति का एक अंग समझना। तुम सबको मेरा स्नेहाशीर्वाद।

नित्य शुभाकाँक्षी,
श्री भक्तिदयित माधव

श्रील परमगुरुदेव